चाची की चुदास का इलाज-3

“Chachi Ki Chudas Ka Ilaj-3 चाची की चुदास का इलाज-2 मैं फिर रसोई में चला गया और देखा तो चाची गैस पर कुछ गरम कर रही थीं। अरे क्या मस्त.. उनकी अधनंगी पीठ और उभरी हुई गांड लग रही थी.. मैं बस उन्हें देखता रहा। लेकिन पता नहीं उन्हें कैसे पता चल गया.. वो फिर […] ...”

Story By: gaurav (gauravs94)
Posted: Friday, March 27th, 2015
Categories: चाची की चुदाई
Online version: चाची की चुदास का इलाज-3

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

चाची की चुदास का इलाज-3

Chachi Ki Chudas Ka Ilaj-3

चाची की चुदास का इलाज-2

मैं फिर रसोई में चला गया और देखा तो चाची गैस पर कुछ गरम कर रही थीं। अरे क्या मस्त.. उनकी अधनंगी पीठ और उभरी हुई गांड लग रही थी.. मैं बस उन्हें देखता रहा। लेकिन पता नहीं उन्हें कैसे पता चल गया.. वो फिर डबल मीनिंग में बोलीं- वहीं से क्या देख रहे हो.. पास आ कर देखो..

मैं हिम्मत करके ठीक चाची के पीछे चला गया और उनसे साथ कर उनके कंधे पर अपना मुँह रखा और पूछा- क्या कर रही हो चाची ?

चाची ने इठला कर कहा- बस गर्म कर रही हूँ..

मैं तो बस वहाँ से चाची के मम्मों की क्लीवेज देख रहा था। चाची भी यह जानती थीं.. लेकिन कुछ बोली नहीं.. मैं खड़ा रहा था… थोड़ी देर बाद चाची ने कहा- कुछ काम नहीं है.. तो अपने चाचा के पास जाकर बैठ.. मैं आती हूँ..

मैं अब सोच में पड़ गया कि क्या बहाना बनाऊँ.. तो मैंने कहा- चाची.. मुझे आपसे कुछ कहना है।

चाची- हाँ बोलो..

मैं- चाची, आप पूछ रही थीं ना.. कि मैं किसे देख कर वो सब कर रहा था ?

चाची- हाँ..

अब मेरा हाथ चाची के चूतड़ों पर रखा हुआ था।

मैं- वो…सी हहा..ची..

चाची- अरे बता ना ?

मैं- चाची.. वो आप थीं..

मैंने हिम्मत करके बोल ही दिया और चाची के जबाव का इन्तजार करने लगा।

मुझे पता था कि वो दिखावे के लिए गुस्सा करेंगी.. पर उससे उल्टा हुआ।

चाची- सन्नी… ओह्ह.. बेटा.. यह तू क्या कह रहा है ? तुझे पता भी है.. चल तू अब यहाँ से जा.. तेरे चाचा सुन लेंगे, तो क्या से क्या हो जाएगा ? हे भगवान.. इसे तो यह भी नहीं पता कि कब क्या बोलना चाहिए और क्या नहीं ?

मैं- आई एम सॉरी.. चाची..

चाची- तू अभी जा ना..

मैं वहाँ से आ कर डाइनिंग टेबल पर बैठ गया और चाची के आने का इन्तजार करने लगा।

चाची आईं और हम लोग खाना खाने लगे। लेकिन चाची मुझसे बात नहीं कर रही थीं। बाद में एक घंटे के बाद चाचा निकल गए और मैं उन्हें एयरपोर्ट तक छोड़ कर वापस आया। चाची अपने कमरे में नहीं थीं.. मैंने कॉल किया तो उन्होंने मेरा फोन कट कर दिया।

फिर एक घंटे के बाद चाची घर आईं। मैं उन्हें देखते ही उनसे ज़ोर से गले लग गया और

कहा- फोन क्यूँ अटेंड नहीं कर रही थीं ? आप को कह कर तो जाना चाहिए ना..

चाची ने मुझे समझाते हुए कहा- अरे बाबा.. मैं कार में थी और ट्रॅफिक पुलिस वाला मुझे ही देख रहा था कि मैं फोन हाथ में लूँ और वो चालान काटे।

मैं अब ठीक था।

चाची भी मुझे परेशानी में देखकर थोड़ी परेशान सी हुईं और थोड़ा मुस्कुरा भी रही थीं।

फिर मेरी जान में जान आई और मैंने अपने आप को सम्हाला। मुझे लगा कि चाची मेरी बात को भूल गई हैं इसीलिए मैं भी बाहर चला गया और एक-डेढ़ घंटे के बाद वापस लौटा।

तब शाम के सात बजे थे.. चाची सब्जी काट रही थीं और वो टीवी भी देख रही थीं। मैं अपने कमरे में गया और फ्रेश हो कर शॉर्ट्स और बनियान में अपने कमरे में पढ़ाई करने लगा।

तभी थोड़ी देर में चाची ने आवाज़ लगाई और कहा- सन्नी डिनर रेडी है.. आ जाओ..

मैं फ़ौरन बाहर आया और चाची की मदद करने लगा। चाची कुछ मानो सोच रही थीं.. मुझसे बात नहीं कर रही थीं। शायद वो मेरे उसी उत्तर की बात को फिर से चालू करना चाहती थीं.. पर कैसे करें.. वो यही सोच रही थीं।

हम खाना खाने बैठे और डिनर करने लगे.. चाची मुझसे नज़रें नहीं मिला रही थीं। चाची ने फटाफट खाना निपटाया और उठने लगीं कि उनके मुँह से 'आह..' निकली.. तो मैंने झट से पूछा- क्या हुआ चाची ?

चाची- कुछ नहीं..

मैं- नहीं चाची.. कुछ तो हुआ है..

चाची- नहीं बेटा.. कुछ नहीं..

यह कहकर वो रसोई में जा कर बर्तन धोने लगीं। मैंने भी अपना डिनर निपटाया और रसोई में जा कर फिर से पूछा.. लेकिन चाची ने नहीं बताया।

अब तकरीबन 8 बज रहे थे। चाची कुछ दर्द में लग रही थीं.. मैं ड्रॉयिंग-रूम में टीवी देखने लगा।

चाची भी बर्तन धो कर मेरे पास बैठी और फिर से उनके मुँह से दर्द की 'आह..' निकली.. तो मैंने टीवी बंद किया और कहा।

मैं- चाची.. आप कुछ परेशानी में हो.. शायद कुछ हो रहा है.. आपको ?

चाची कुछ नहीं बोलीं.. मैं उन्हें ही देख रहा था.. वो समझ गईं कि बात जाने बिना मैं मानूँगा नहीं.. तो वो बोलीं- मैं जब बाहर गया था.. तब वो ग़लती से रसोई में गिर गई थीं और कुछ अन्दरूनी चोट आई है।

मैं- कहाँ ?

चाची ने नीचे देखा और अपनी जाँघ पर हाथ रखा।

मैंने कहा- चलो चाची.. मैं तुम्हें दर्द वाला मलहम लगा देता हूँ।

चाची- नहीं बेटा.. मैं खुद लगा लेती हूँ।

मैं- अरे चाची.. आप तो डॉक्टर हैं और समझती हैं कि मरीज़ अपने आप कभी अच्छे से

मालिश या दवाई नहीं लेता। चलिए.. आपके कमरे में चलते हैं।

मैं उन्हें उनके कमरे में हल्की सी ज़बरदस्ती के साथ ले गया, फिर मैंने पूछा- चाची.. आयंटमेंट कहाँ है ?

चाची- अरे बाबा.. इस दर्द में मैं यह भूल ही गई कि घर में आयंटमेंट है ही नहीं..

मैंने तुरंत एक आईडिया निकाला और कहा- कोई बात नहीं चाची.. मैं फ्रिज में से बर्फ ला कर लगा देता हूँ।

मैं बिना चाची की सुने.. बर्फ लाने चला गया और दो ही मिनट में बर्फ ले कर वापस आया और देखा कि चाची को हल्की सी शर्म आ रही थी।

इसीलिए मैंने हल्का सा बनते हुए कहा- अरे चाची.. तुम सोचो मत और मुझसे क्या शरमाना ? आपको दर्द हो रहा है और मैं आपका इलाज कर रहा हूँ।

चाची- अच्छा बाबा.. ठीक है..
वो अपने पेट के बल लेट गईं और आँखें बंद कर लीं।

ओह माय गॉड.. चाची की पिछाड़ी क्या मस्त लग रही थी… गोरी-गोरी गर्दन.. फिर लो कट काले ब्लाउज में छुपा हुई गोरी पीठ और फिर मस्त कमर.. ऊहह…. मस्त चूतड़ और फिर लम्बी टाँगें..
मैं तो ऐसे ही चाची का चक्षु-चोदन करने लगा..

तभी चाची ने मेरी ओर देखा और मैं उनके कुछ कहने से पहले ही होश में आ गया और एक बर्फ का टुकड़ा अपने हाथ में रूमाल में रख कर चाची की साड़ी ऊपर करने लगा तो चाची ने मेरा हाथ पकड़ लिया और कहा- मैं खुद कर देती हूँ।

चाची ने अपनी काले रंग की साड़ी उतारनी शुरू की और उनके उठने के अंदाज़ से लग रहा था कि वो मुझे सिडयूस करने के लिए ही यह सब कर रही हैं।

उन्होंने बड़े आराम से अपनी साड़ी उठाई और अपने घुटनों तक ले कर आईं और फिर मेरी ओर देखा। उनका इशारा पाते ही मैं समझ गया कि अब बर्फ लगाने की बारी आ गई है।

मैंने जानबूझ कर हल्के से बर्फ उनके घुटने के ऊपर रखी और बर्फ रखते ही वो ठंड से और उत्तेजना से कांप गईं। मैंने फिर बर्फ को गोल-गोल घुमाना शुरू किया और चाची की गाण्ड को ही देखने लगा।

अभी थोड़ा ही वक्त हुआ था कि मैंने चाची से कहा- चाची.. अरे..रे आपकी साड़ी थोड़ी गीली हो रही है.. अगर आप कहें तो मैं इसे थोड़ा ऊपर उठा दूँ?

मैंने चाची के जवाब की परवाह किए बिना मैंने साड़ी हाथ में ले ली और इतने में चाची ने मेरी ओर देखा और एक अजीब सी मुस्कराहट के साथ उन्होंने 'हाँ' में सर हिलाया और मैंने भी शैतानी सी मुस्कराहट के साथ उन्हें जबाव दिया और उनकी साड़ी को थोड़ा उठाने के बजाए मैंने उनकी पूरी जांघों तक को नंगा कर दिया और साड़ी बिल्कुल उनकी गाण्ड के पास रख दी।

अब उनकी नंगी जाँघ को देखने के बाद मैंने दूसरे हाथ में भी बर्फ का टुकड़ा ले लिया और दोनों जाँघों पर बर्फ से मसाज करने लगा।

मैंने बस एक-दो बार ही बर्फ के साथ अपना हाथ उनकी नरम जांघों पर फिराए और कहा।

मैं- चाची.. एक तरफ बैठने से दूसरी ओर की मसाज करना ठीक से नहीं हो रही.. मुझे आपकी टाँगों के बीच में बैठना पड़ेगा.. तो क्या आप… ?
और मेरी बात ख़त्म करने से पहले ही उन्होंने मेरी ओर देखे बिना और आँखें खोले बिना..

अपने दोनों पैर फिर से बड़े ही कामुक अंदाज़ में बड़े आराम से फैला दिए.. जैसे कह रही हों.. लो चोद लो मुझे..

ओह.. क्या मस्त छटा थी.. उनकी काली साड़ी में गोरे-गोरे नंगे पाँव फैलाने के अंदाज़ सच में क़ातिलाना था।

मेरा तो लंड अब खड़ा हो चुका था और चाची को मुझे अब इस बात का अंदाज़ दिलवाना था.. इसीलिए मैं उनके पाँव के बीच में बैठ गया और अपने दोनों हाथों में बर्फ ले कर आराम से थोड़ा-थोड़ा दबाते हुए बर्फ घुमाने लगा और घुमाते-घुमाते बर्फ को उनकी गाण्ड तक ले जाने लगा।

जब-जब मेरे हाथ उनकी गाण्ड तक जाते तो उनकी पैन्टी की किनारियाँ मुझे महसूस हो रही थीं।

मैं अब अपने आपे से बाहर होता जा रहा था। एकदम सेक्सी चाची और मैं इस स्थिति में.. मैंने फिर बड़े आराम से अपने हाथ चाची की पैन्टी में सरकाने की कोशिश की.. पर चाची की पैन्टी बहुत ही चुस्त थी.. इसीलिए हो नहीं पाया।

मैंने चाची से पूछा- चाची.. आराम मिल रहा है ?

चाची ने आँखें बन्द किए हुए ही कहा- हाँ बेटा.. आराम तो मिल रहा है… लेकिन अब तुम रहने दो.. अब मैं ठीक हूँ..

मैं- नहीं चाची.. मैं और मालिश कर देता हूँ।

चाची- नहीं सन्नी.. मैंने कहा ना.. कि अब हो गया.. मैं ठीक हूँ..

फिर मुझे अपने आप पर गुस्सा आया कि क्यूँ मैंने खुद ही बात छेड़ी। सब कुछ ठीक चल

रहा था.. लेकिन मैं यह समझ नहीं पा रहा था कि चाची को भी मज़ा आ रहा था फिर क्यूँ उन्होंने मुझे जाने को कहा ?

आप अपने जवाब और प्यार मुझे ईमेल भेज कर कीजिएगा.. ये मेरी जिन्दगी का एक सच्चा अनुभव आप सब से साझा कर रहा हूँ.. अगर आपका प्रोत्साहन मिला.. तो और भी काफ़ी दिलचस्प हादसे लेकर आप लोगों के लंड खड़े करवाता रहूँगा.. और साथ ही सभी चूत वालियों को ऊँगलियों का मज़ा भी मिलता रहेगा…
आपका अपना गौरव

कहानी जारी है।

Other stories you may be interested in

अपने ऑफिस वाले सर से होटल में चुद गयी

हैलो फ्रेंड्स, मेरा नाम नेहा है. मैं जॉब करती हूँ और शहर में रहती हूँ. मैं बहुत सेक्सी और बड़ी चूचियां और बड़ी गांड वाली काफी सुन्दर लड़की हूँ. मेरी जॉब बहुत अच्छी है, ये जॉब मुझे मेरे सेक्सी जिस्म […]
Full Story >>>

दोस्त की बहन की हवस पूरी की

दोस्तो ! मेरा नाम दीपक है, मैं 26 साल का हूँ. मेरी लम्बाई 6 फीट और 1 इंच है. मैं देखने में काफी गोरा हूं और मेरी लम्बाई की वजह से मेरी पर्सनेलिटी भी अच्छी दिखाई देती है. मेरी पिछली कहानी […]
Full Story >>>

फुफेरी भाभी की हवस और मेरा लंड

नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम पंकज है (ये बदला हुआ नाम है) मैं अपने बारे में बता दूं, मैं सोनीपत हरियाणा का रहने वाला हूं. मेरी लम्बाई 6 फुट 2 इंच है और मैं एक अच्छे शरीर का मालिक हूँ. मेरे […]
Full Story >>>

बेटे की कामवासना पूर्ति

मेरा नाम सुषमा है. मैं एक हाउस वाइफ हूँ. मेरी उम्र 42 साल है. मेरे पति मुझसे 20 साल बड़े हैं. उनकी उम्र 62 साल की है. आपने कई बार सुना होगा कि प्यार अंधा होता है. प्यार में उम्र […]
Full Story >>>

बीपीएल राशनकार्ड बनवाने की फीस

हैलो दोस्तो, मेरा नाम अजय है. मैं उत्तर प्रदेश का रहने वाला हूँ. आज मैं आपके सामने अपनी अगली कहानी पेश कर रहा हूँ. ये कहानी किसी दूसरे लेखक/पाठक ने मुझे भेजी है. जिसने मुझे ये कहानी भेजी है, वो […]
Full Story >>>